INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

VOLUME 2, ISSUE ,11 November, 2014

ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

समकालीन महिला उपन्यासकार–स्त्री विमर्श का संदर्भ

सविता डहेरिया
प्लॉट नं. 25, ओजस होम्स कालोनी,
धनवंतरी नगर, जबलपुर–482003 (म.प्र.)

समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में सूत्र रूप में यही बात प्रकट होती है कि नारी में जो गुण है, कौशल है, उन्हें भुलाकर मात्र उसके रूप और रंग को देखा जाता है। जिस दिन नारी के गुण को देखा जाएगा, उसी दिन उसे एक व्यक्ति का स्थान प्राप्त हो जाएगा। इसलिए स्त्री–विमर्श, स्त्रियों के लिए किया गया एक आन्दोलन है।[1] स्त्री–विमर्श पुरूषों के विरोध में संघर्ष न होकर जैविक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तरों पर स्त्री को जो कनिष्ठ स्थान दिया जाता है, उसे समाप्त कर पुरूषों के समान स्थान प्राप्त करके अपने अस्तित्व की अलग पहचान निर्मित कराता है। साहित्य में स्त्री–विमर्श एक मानवीय दृष्टि है जो स्त्री पुरूष भेद को मिटाकर दोनों में भी समानता लाने की बात करता है। डॉ. प्रभा खेतान के अनुसार–''स्त्री न गुलाम रहना चाहती है, न ही पुरूष को गुलाम बनाना चाहती है। स्त्री चाहती है मानवीय अधिकार ।''[2]

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1975 को नारी वर्ष घोषित करने के बाद नारी स्वतंत्रता आन्दोलन विश्व व्यापी बन गया । भारत में भी इसका प्रभाव हुआ और 1975 बे बाद सबसे अधिक रूप में हिन्दी में महिला उपन्यासों का सृजन हुआ है। सन् 1975 के बाद महिला उपन्यासकारों ने स्त्री–विमर्श को आधार बनाकर बहुत प्रभावी उपन्यास साहित्य लिखा है। सातवें दशक के बाद का महिला उपन्यास, बाधा एवं नियंत्रण से टक्कर देने वाली स्त्री का चित्रण किया है या अपनी राह स्वयं बनाने और अपने पैरों पर आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करने वाली स्त्री को अंकित किया है। जाति–अंधविश्वासों के विरूद्ध इन महिला उपन्यासकारों ने लड़ाई लड़ी है, अपनी स्वायत्तता प्राप्त करने के लिये।[3]

महिला लेखन में उपन्यासों की बात करें तो मन्नू भण्डारी का महाभोज महिला प्रेम को छोड़कर भारतीय राजनीति पर लिखा गया उपन्यास है। आगे चलकर प्रेम को छोड़कर अन्य विषयों पर जो महिलाओं ने उपन्यास लिखे हैं, उसके कारण महिला लेखन में विविधता आयी है। शिवानी के उपन्यास 'कृष्णकली' में शारीरिक शोषण को चित्रित किया गया है। मेहरून्निसा परवेज के 'कोरजा' में विधवा स्त्री के शोषण को अंकित किया गया है । कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' में यौन–इच्छाओं की प्रकटीकरण है तो शशिप्रभा शास्त्री के 'नावें' में अविवाहित मातृत्व की समस्या है । नासिरा शर्मा के उपन्यास 'ठीकरे की

Please cite this Article as: सविता डहेरिया, समकालीन महिला उपन्यासकार–स्त्री विमर्श का संदर्भ International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.11, November, 2014

मंगनी' में मुस्लिम परिवार में एक शिक्षित लड़की के विद्रोह की कहानी है तो ऋता शुक्ला के 'अग्नि पर्व' में वर्तमान ग्रामीण जीवन के अनेक अच्छे–बुरे अनुभव प्रकट हैं। मृदुला गर्ग ने 'उसके हिस्से की धूप', 'चित्तकोबरा' आदि उपन्यासों के आधार पर स्त्री–विमर्श की सशक्त लेखिका के रूप में सिद्ध किया है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' एवं चित्रा मुद्गल के 'आवां, प्रभा खेतान के 'पीली आंधी' अलका सरावगी के 'कलि कथा : वाया बाई पास' अमिता सिंह के उपन्यास 'अपनी सलीबें' जया जादवानी के उपन्यास 'तत्वमसि' चन्द्रकांता का उपन्यास 'कथा सतीसर' सूर्यबाला का 'दीक्षांत' उपन्यास गीतांजलिश्री का उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' आदि उपन्यासों में महिला लेखिकाओं ने ग्रामीण जीवन, मजदूर वर्ग, शिक्षा संबंधी एवं नारी के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनकी समस्याओं को उभारा है और किस तरह वह अपने हक के लिए संघर्ष कर उसे प्राप्त कर सकती हैं, यह उपाय भी सुझाया है। इन महिला उपन्यासकारों ने यौन तृप्ति से लेकर नारी को कहीं बेटी, कहीं पत्नी, कहीं कामकाजी नारी, कहीं खेत और सड़क की मजदूरिन के रूप में चित्रित किया है, स्त्री–विमर्श से नारियों की सोच में कुछ परिवर्तन तो आया है, परन्तु यह शहरों तक ही समटकर रह गया है, यह जागरूकता आज गांव तक ले जाने की जरूरत है । तभी मेरे सपनों का भारत का सपना साकार हो पायेगा । महिला उपन्यासकारों ने स्त्री–विमर्श को आधार बनाकर जो उपन्यास लिखे हैं, वे हिन्दी साहित्य की उपलब्धि है ।

स्त्री अपनी ही सम्पत्ति का खुलकर प्रयोग नहीं कर सकती । महिला होने के कारण उसका अनेक क्षेत्रों में शोषण होता है । उसे निम्न स्तर का माना जाता है, सामाजिक क्षेत्र में अवसर होते हैं, उनसे उसे वंचित किया जाता है । इन सबसे स्पष्ट होता है कि नारी कितनी उपेक्षित है । स्त्री की शारीरिक सुन्दरता के प्रति पुरूष वर्ग अपना नजरिया ही नहीं बदलता । स्त्री ने आज पुरूष को सभी क्षेत्रों में पीछे छोड़ दिया है। पुरूष के वर्चस्व के क्षेत्र को भी उसने चुनौती के रूप में स्वीकार किया है । आज नारी अपने जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं के साथ खुला विमर्श करने की तैयारी में है। नारी आज समय और समाज के बदलते सरोकारों के साथ अपनी नवीनतम चुनौतियों के अनुरूप अपने आपको तैयार कर रही है, नारी अपने मानवीय एवं सामाजिक व्यक्तित्व के सम्यक निर्वाह द्वारा ही स्त्री–विमर्श को सार्थकता प्रदान कर सकती है ।

जब हम उत्तर आधुनिकता की बात करते हैं तो सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टि से यह काल उथल–पुथल का होने के कारण इस काल में महिला कथा साहित्य में अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। नारी का शिक्षित होना एवं समाज के अनेक क्षेत्रों में उसका प्रवेश करना यह घटना भी इस काल में महत्वपूर्ण रही है। परिवर्तित मूल्य एवं व्यवस्था को ध्यान में रखकर प्रभावी कथा साहित्य लिखने का कार्य महिला लेखिकाओं ने किया है। इस काल में नर–नारी के संबंधों में एक बिखराव सा आया है। इसका भी मर्मस्पर्शी चित्रण महिला कथा–साहित्य में दिखाई देता है।[4] महिला कथा लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में महिलाओं की संवेदनाएँ, उनकी बदली हुई मानसिकता तथा पारिवारिक समस्याओं तथा अपने समय के यथार्थ का आकलन करते हुए विचारशील कहानियों का निर्माण किया है। मध्यवर्ग पर होने वाले अन्याय, अत्याचार, जुल्म और शोषण को चित्रित करने में महिला कथाकारों को सफलता प्राप्त हुई है। प्रेम के विषय को लेकर अधिकांश साहित्य लिखा गया है। इन सीमाओं के बावजूद भी महिला लेखिकाओं ने, जिसकी संख्या बहुत ही कम है, नयी–नयी संवेदनाओं को मौलिकता के साथ उद्घाटित किया है। महिला लेखन में आज कल महिला लेखिकाएँ आत्मकथा को किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति प्रदान कर रही हैं। इस संबंध में पूनम कुमारी का कहना है–''स्त्री की आत्मकथा का मुद्दा स्त्री लेखन के साथ–साथ स्त्री की सामाजिक–सांस्कृतिक निर्मित से भी जुड़ा है।

इसी कारणवश स्त्री– आत्मकथाओं का लेखकीय और सामाजिक तर्क अस्मिता मूलक लेखन के तर्क से भी जुडता है। फलतः स्त्री आत्मकथाओं की गढ़न भी आधुनिक साहित्य में पहले से स्थापित और प्रचलित रही आत्मकथाओं से भिन्न स्वरूप और हैसियत का निर्वाह करती है। लम्बे समय तक स्त्रियों का लेखन क्षेत्र में अपवादवश (या छिटपुट) ही आ पाना या बहुतायत में पसरी अनुपस्थिति, स्त्रियों की चुप्पी के लम्बे कालखण्ड़ के बाद इस क्षेत्र में आज स्त्री की सक्रियता स्वयं लेखन प्रक्रिया को और स्त्रियों को विशिष्ट संदर्भ प्रदान करती है। स्त्रियाँ इतने समय तक चुप क्यों रहीं ?.....अभिव्यक्ति से अभिव्यक्ति माध्यम तक के प्रति विकसित यह नवीन सहजता और स्त्री जीवन से जुड़ी अनुभवात्मकता का योग ही स्त्री के इस लिखे को स्त्री जीवन का यथार्थ दस्तावेज बनाता है।[5] कहना न होना कि इस जीवन प्रक्रिया से गुजरते हुए वे अपनी रचनात्मकता के माध्यम से अपने सशक्तीकरण का रास्ता तलाश करती हैं। अपने सशक्तीकरण के लिये जिस रास्ते का चुनाव उन्होंने उसमें पूरी तरह नहीं तो बहुत कुछ रचनात्मक सफलता जरूर मिलती है। अपने लेखन के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में असंख्य पाठकों का प्यार मिला, जिसके द्वारा वे अपने पुनर्जीवन की एक नयी कहानी लिखती हैं। यह कहानी किसी भी नारी के लिए नारी सशक्तीकरण का प्रमाणिक दस्तावेज हो सकती है।

संदर्भ – ग्रंथ

01. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवाद, डॉ. अमर ज्योति,पृ.15.

02. हंस, दिसम्बर, दिल्ली, 1995, पृ.31.

03. हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, इंदु प्रकाश पाण्डेय, सं. 2004, पृ. 17.

04. भारतीय साहित्य संवेदनाओं का अनुशीलन, डॉ. हणमंतराव पाटील, समता प्रकाशन, कानपुर,पृ. 72.

05. हम भी मुंह में जबान रखती हैं : पूनम कुमारी सहरावत, समयांतर,जून 2006,अंक–09.